विचार बिन्दु

प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें उतावली ठीक नहीं, जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय पर फल वह अपने समय से ही देता है। –वृंद

मोदी ने मन की बात में हौसला अफजाई के साथ अध्यापकों और पैरेंट्स को दिया संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के 8वें संस्करण में बच्चों की हौसला बढ़ाने के साथ ही अध्यापकों और अभिभावकों को भी स्पष्ट संदेश दिया है। आज आवश्यकता बालक मन को समझने, उसकी प्रतिभा को निखारने, प्रस्पिर्धा के स्थान पर क्रियेटिविटि को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। बच्चों में परीक्षा के नाम से भय ना होकर उत्साह और सकारात्मक सोच होना चाहिए। डर नहीं बल्कि कुछ पाने की चाह होनी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार फिर परीक्षाओं से पहले देश के परीक्षार्थी बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों से मन की बात के माध्यम से संवाद कायम कर मोटिवेट करने की बडी पहल की है। मन की बात में परीक्षा पर चर्चा के आठवें संस्करण का महत्व इसलिए महत्वपूर्ण और सामयिक हो जाता है कि आने वाले दिनों में सीबीएसई और राज्यों के बोर्डों की परीक्षाएं होने जा रही है। देश के प्रधानमंत्री की संपूर्ण परीक्षा व्यवस्था और इसके साइड इफेक्ट को समझते हुए संवाद कायम करना अपने आप में महत्व रखता है। देश के लगभग सभी कोनों से तनाव, शिक्षकों और अभिभावकों की अतिमहत्वाकांक्षा के चलते बच्चों द्वारा डिप्रेशन में जाने और अपनी जीवन लीला समाप्त करने के समाचार आम होते जा रहे हैं। हांलाकि शिक्षा नगरी कोटा बच्चों की आत्महत्या के लिए बदनाम हो गया है पर कोटा से अधिक आत्महत्याएं देश के अन्य हिस्सों में भी हो रही है। हांलाकि कोचिंग हब कोटा को आत्महत्याओं के दाग को धोने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे। खैर यह विषयांतर होगा। खास बात यह है कि प्रधानमंत्री मोदी ने एक जिम्मेदार अभिभावक की भूमिका निभाते हुये ना केवल परीक्षार्थियों की हौशला अफजाई की है अपितु अध्यापकों और पैरेंट्स को भी स्पष्ट संदेश दिया है।

इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि बच्चों के कोमल मन को प्रतिस्पर्धा के बोझ तले दबाने में आज घर, परिवार, समाज, शिक्षा केन्द्र और सोशियल मीडिया प्रमुखता से नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। पता नहीं शिक्षा व्यवस्था में भी यह किस तरह का बदलाव है कि 20-21वीं सदी में दसवीं पास करना बड़ी बात माना जाता था तो परीक्षा देने वाले लाखों बच्चों में से फर्स्ट डिविजन कुछ हजार तक ही रहते थे उसके बाद लगभग दोगुणे द्वितीय श्रेणी में व बाकी तीसरी डिविजन में संतोष कर लेते थे। आज हालात यह है कि परीक्षा देने वाले अधिकांश बच्चों के मार्क्स तो 90 प्रतिशत या इससे अधिक ही होते हैं। 80 से 90 प्रतिशत तक उससे कम और उनसे भी कम बच्चें इससे कम प्रतिशत में होते हैं। यहां सवाल परीक्षा प्रणाली को लेकर हो जाता है तो दूसरी और प्रतिस्पर्धा की यह खिचड़ी 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले बच्चों और खासतौर से उनके पैरेंटस में होने लगी है। अब तो हो यह गया है कि पैरेंट्स की प्रतिष्ठा के लिए बच्चों की बली चढ़ाई जाने लगी है। प्रधानमंत्री मोदी ने सही ही कहा है कि कूकर के प्रेशर की तरह बच्चों को प्रेशर में रखना ही अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका में आ गया है। अब अभिभावक दिशा देने वाले के स्थान पर अपनी कुंठा को बच्चों से पूरा कराने में जुटे हैं। यह वास्तविकता है। बच्चें की लगन किसी और दिशा में होती है और उससे अपेक्षा कुछ और करने या बनाने की होने लगती है। कुछ बच्चों का कोमल मन यह प्रेशर सहन नहीं कर पाता है और डिप्रेशन या मौत को गले लगा लेते हैं और फिर पैरेंट्स आंसू पूछते रह जाते हैं।

परीक्षा पर चर्चा की अच्छी बात यह है कि देश के 3.30 करोड़ बच्चों, 20 लाख शिक्षकों और साढ़े पांच लाख से अधिक अभिभावक इससे जुड़े। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए क्रिकेट का उदाहरण देते हुए बैटिंग करने वाले खिलाड़ी की भूमिका निभाने का संदेश दिया तो टाइम मैनेजमेंट पर फोकस करने, लिखने की आदत ड़ालने, खुल कर अपनी बात कहने, मन को शांत रखने, केवल किताबी कीड़ा नहीं बनने, रोबोट नहीं इंसान बनने और पूरी नींद लेने के लिए मोटिवेट किया। सबसे खास बात यह कि बच्चों को स्वयं से प्रतिस्पर्धा करने का संदेश दिया।

परीक्षा पर चर्चा की अच्छी बात यह है कि देश के 3.30 करोड़ बच्चों, 20 लाख शिक्षकों और साढ़े पांच लाख से अधिक अभिभावक इससे जुड़े। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए क्रिकेट का उदाहरण देते हुए बैटिंग करने वाले खिलाड़ी की भूमिका निभाने का संदेश दिया तो टाइम मैनेजमेंट पर फोकस करने, लिखने की आदत ड़ालने, खुल कर अपनी बात कहने, मन को शांत रखने, केवल किताबी कीड़ा नहीं बनने, रोबोट नहीं इंसान बनने और पूरी नींद लेने के लिए मोटिवेट किया। सबसे खास बात यह कि बच्चों को स्वयं से प्रतिस्पर्धा करने का संदेश दिया। हमें दूसरे के स्थान पर स्वयं से प्रतिस्पर्धा करनी है। स्वयं से प्रतिस्पर्धा करेंगे तो आत्मविश्वास बढ़ेगा। दरअसल होता यह है कि दूसरे प्रतिस्पर्धा करने के चक्कर में नकारात्मकता अधिक आती है। होना तो यह चाहिए कि अपनी कमियों को ही सबक बनाकर बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

आज बच्चों को खुला आसमान चाहिए। जहां वह अपनी क्षमता का बेहतर प्रदर्शन कर सकें। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए कहा है कि विफलताओं से निराश नहीं होकर उससे सबक लेना चाहिए। जीवन में सफल होने के लिए बहुत कुछ होता है। मोदी जी ने मन की बात में बच्चों, परिजनों और टीचर्स तीनों को ही संदेश देने का प्रयास किया है। होता यह है कि जो बच्चें हौशियार होते हैं या प्रभावशाली परिवार के हैं तो टीचर्स का उन पर विशेष ध्यान होता है और जो बच्चें कमजोर होते हैं तो पीटी मीटिंग के माध्यम से पैरेंट्स को नीचा दिखा कर इतिश्री कर लेते हैं। बच्चों की नाकामी पर कभी किसी स्कूल ने या टीचर ने जिम्मेदारी ली हो यह आज तो लगभग असंभव ही है। चाहे आप पढ़ाई के नाम पर स्कूल को कितनी ही फीस देते हो आप पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तौर पर बच्चें को ट्यूशन कराने का दबाव तो आ ही जाता है। यदि शिक्षण संस्थानों में कमजोर और औसत बच्चों पर अधिक ध्यान दिया जाएं तो तस्वीर का पहलू दूसरा ही हो सकता है। इसी तरह से पैरेंट्स को भी नसीहत देने में मोदी जी पीछे नहीं रहे हैं। पैरेंट्स को बच्चों की लगन, रुचि को समझना होगा। अपनी अपेक्षाएं उस पर लादने के स्थान पर दिशा देने के प्रयास करने होंगे। बच्चों के साथ बैठकर खुलकर बात करें। उनकी ईच्छा लगन और कोई परेशानी है तो उसे समझने का प्रयास करें। बच्चों में परस्पर तुलना करके बालक मन को कुंठित नहीं करना चाहिए। बच्चों को निराश करने के स्थान पर मोटिवेट करने के समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। बच्चों को मशीन नहीं बनाया जाना चाहिए। बच्चों को समझाया यह जाना चाहिए कि 24 घंटें का समय सभी के पास होता है, इस समय को किस प्रकार से उपयोग करना है इस पर फोकस हो तो निश्चित रुप से अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। कहने का अर्थ यह है कि बच्चों का मनोबल बढ़ाने उनमें सकारात्मकता विकसित करने की दिशा में हमें काम करना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने परीक्षाओं से पहले अपने प्रधानमंत्री काल में 8वीं बार परीक्षा पर चर्चा करते हुए बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों को संदेश देने का सार्थक प्रयास किया गया है। अब सबका दायित्व हो जाता है कि इन सकारात्मक पक्षों को बच्चों तक पहुंचाया जाएं। बच्चों को समझाना होगा कि बड़ी बात जीवन में सफल होना है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

क्या विज्ञान ही वास्तविक अलौकिकता है?

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि हम आज से हजारों साल पहले की दुनिया के बारे में कल्पना करें और यदि धर्म कथाओं की किंवदंतियों को छोड़ दिया जाए जो कि वास्तविकता में बहुत बाद में प्रकाशित हुई हैं, तो हम स्पष्ट तरह से अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे अति प्राचीन पुरखों ने एयरोप्लेन, कार, कंप्यूटर, मोटरबाइक आदि डिजाइन करने के बारे में नहीं सोचा होगा। एक समय ऐसा भी रहा होगा जब आदि मानव ने घर या चारपाई तक के बारे में भी कल्पना न की होगी। ज्यादा दूर नहीं जाएं तो भी हम पाएंगे कि आज से चंद दशकों पहले किसी ने माइक्रोचिप और आधुनिक मोबाइल के बारे में सोचा भी नहीं होगा। यदि ध्यान से सोचा जाए तो उपरोक्त सभी विकास और आधुनिक तकरीबन सारी वस्तुएं भूतकाल में कभी भी पृथ्वी पर मानव जीवन और जीवन के प्रति सोच का हिस्सा नहीं रही है जबकि हम चौथी विकास क्रांति के तो अभी प्रारंभ में ही हैं। इस मानवीय विकास का कोई व्यक्ति विशेष प्रणेता भी नहीं है और 17वीं से 20वीं सदी के नायक वैज्ञानिकों की तरह आज जन सामान्य में सर्व विदित वैज्ञानिक भी नहीं हैं जिन्हें इस क्रांतिकारी विकास का बड़ा श्रेय दिया जा सके। आज का विज्ञान एक संस्थागत, व्यावसायिक और व्यापक आधार वाला तंत्र है जहां उपभोक्ता भी आविष्कार के विकास में सहायक है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता मोबाइल फोन और कार आदि के विकास में भी सहायक होते हैं, इनपुट्स देते है और एक तरह से आर्थिक भागीदारी करते हैं क्योंकि बड़ी मात्रा में उपभोग निर्माताओं के पास बहुत बड़ी मात्रा में धन प्रवाहित करता है। धन की यह उपलब्धता और नई खोज को जन्म देती है।

हमारे पूर्वजों ने तारे, सूरज, चांद, बादल आदि को बहुत ही गौर से देखा होगा। वे अचंभित भी हुए होंगे और कितनी ही तीव्र उत्सुकताओं ने उनके मस्तिष्क के उन्हीं भागों को क्रियाशील बनाया होगा जिन भागों को आज की वैज्ञानिक उपलब्धित सक्रिय करती हैं। माना कि उनके पास दवाएं, उपकरण, कृषि ज्ञान, स्वचालित हथियार और घरेलू संसाधन नहीं थे परंतु मानव जीवन की प्रारंभिक अवस्था के हजारों साल बाद उन्होंने इस सब आयामों के बारे में कल्पना करना अवश्य प्रारंभ किया होगा फिर चाहे ऐसे लोग बहुत कम संख्या में ही क्यों न रहे होंगे। उन्होंने आकाशीय और तटीय घटनाओं को देखा होगा और उनका विश्लेषण करने के प्रयास भी किए होंगे परंतु ज्ञान एवं संसाधनों के अभाव में वे ज्यादा कुछ कर नहीं पाए। आज का वैज्ञानिक आधारभूत ढांचा तो आज से 20-25 वर्ष पहले तक ही उपलब्ध नहीं था। ऐसे हालातों में यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि बीती सदियों में हजारों साल के मापदंड पर देखा जाए तो किसी व्यक्ति के जीवन में एक भी क्रांतिकारी घटना या खोज न हुई हो क्योंकि उस समयकाल में क्रांतिकारी खोज तो सैकड़ों सालों में एक दो बार हुआ करती थी जैसे कि आग को पैदा करना, धातु तैयार करना, धनुष का विकास आदि।

मनुष्य ने निश्चित तौर पर उस दौरान भी एक आरामदायक और सुरक्षित जीवन के बारे में प्रयास किया होगा। विकास को गति देने की कोशिशें जरूर हुई होंगी लेकिन संसाधन नहीं होने से बात आगे नहीं बढ़ती थी। ऐसे में लोग कल्पनाएं करते थे जो आगे चलकर किवदंतियां बनी और एक समयकाल के बाद धार्मिक ग्रंथों का हिस्सा बन कर आज तक हमारे सोच पर छाई हुई है। मिथक की अपनी एक जीवन शक्ति होती है जो सदियों बाद भी उसे सजीव जैसा रखती है क्योंकि यह मिथक मानव मस्तिष्क के एक विशेष हिस्से को सदियों तक जागृत किए रखे था। मिथक से मुक्ति पाना आसान नहीं है फिर चाहे कोई विज्ञान पढ़े या मनोविज्ञान का अध्ययन करे। यहां एक भय यह है यदि एआई ने इस मानवीय मिथक कमजोरी को पकड़ लिया तो भविष्य में यह नई शक्ति मनुष्य को पछाड़ कर उसके अस्तित्व पर हावी हो सकती है।

18वीं सदी के मध्य से आधुनिक औद्योगिक क्रांति कोयले की खोज से प्रारंभ हुई और 21वीं सदी के आते आते तो विकास की घटनाएं बड़ी तेज गति से बढ़ी। आज स्थिति यह कि कोई 7 लाख किलोमीटर प्रति घंटे की गति से अग्रसर सूर्य यान हमें अचंभित नहीं करता, इस बारे में आज का जन समूह बात तक नहीं करता, कोई नई खोज हमें उत्साहित तो करती है पर हम विस्मित नहीं होते है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अब हमारे सौ साल के अपेक्षित जीवन में हजार के आसपास नई वस्तुएं हमारे आसपास निर्मित हो रही हैं और असंख्य छोटे-बड़े आविष्कार लगातार सामने आते रहते हैं। आविष्कार की निरंतरता ने आविष्कार से चमत्कृत होने के हमारे स्वभाव को समाप्त कर दिया है। ऐतिहासिक रूप में प्रबोधन या अलौकिकता को सत्ता ने अध्यात्म एवं धर्म से जोड़े रखा है।

यह एक सूक्ष्म तरीके का षडयंत्र है जिसके द्वारा सत्ता में बैठे लोग हर एक व्यक्ति को नियंत्रित रख सकें। विज्ञान की क्रांति ने एक विशेष प्रकार की अलौकिकता का विकल्प हमारे सामने रखा है। विज्ञान का ज्ञान हर समय हर जगह उपलब्ध है। आपका मोबाइल फोन विश्व की किसी भी लाइब्रेरी से कितने ही गुना अधिक सूचनाएं एवं विचार आप तक तुरंत प्रभाव से पहुंचा सकता है। ज्ञान की यह उपलब्धता एक क्रांति है जो सत्ता में बैठे लोगों के लिए बड़ी चुनौती बन कर उभर रही है।

यही कारण है कि पूरे विश्व में लोगों को वापस पुराने धार्मिक ग्रंथों की तरफ धकेला जा रहा है। माना कि इन ठांथों में कुछ बेहतरीन ज्ञान है परन्तु इनमें अधिकता तो कट्टर स्व: मताभिमान (डोगमा) की ही पाई जाती है। इन ग्रंथों में उपस्थित मिथ्या को इंगित करना जानलेवा हो सकता है। इसके विपरीत विज्ञान में हर थ्योरी का विरोध हुआ है, होता रहेगा और यह आलोचना ही विज्ञान के विकास का कारण रहा है। विज्ञान में हर सिद्धांत को सिद्ध होने की कसौटी से गुजरना ही पड़ेगा और यह बात ही विज्ञान के विकास का सबसे बड़ा कारण है।

यह एक बड़ा कारण है जिसके कारण विज्ञान को व्यापार के साथ गठबंधन में डाल कर सत्ता ने इसकी आलौकिकता को नष्ट कर दिया है ताकि लोग विज्ञान को अलौकिक मार्ग की बजाय धनोपार्जन का माध्यम मात्र मान लें। ऐसा करने में विश्व की सत्ताएं सफल हो रही है जो कि एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। सामान्य लोग सत्ता में बैठे लोगों का अंधानुकरण कर विज्ञान का उपयोग नहीं कर पा रहे है बल्कि इसके दुरुपयोग द्वारा टारगेटेड झूठ के प्रसारण में सहायक हो रहे हैं। यह एक ऐसा कारण है जो विज्ञान के माध्यम से अलौकिकता तक पहुंचने में बड़ी बाधा बन रहा है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

कुलधरा में मांडणा आर्ट प्रदर्शनी का आयोजन

मांडणा आर्ट प्रदर्शनी का पर्यटकों ने लुत्फ उठाया

देशी-विदेशी सैलानियों ने स्थानीय मांडणों को बारिकी से देखा एवं अपने कैमरों में कैद किया।

जैसलमेर, (निसं)। मरू महोत्सव के अंतिम दिवस 12 फरवरी बुधवार को प्राचीन ऐतिहासिक कुलधरा गांव में मांडणा आर्ट प्रदर्शनी व रंगोली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मांडणा आर्ट प्रदर्शनी व रंगोली को देशी-विदेशी सैलानियों ने उत्साह के साथ देखा एवं वहां पर स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा दी जा रही सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का लुत्फ उठाया।

जैसलमेर विकास समिति के सचिव चन्द्रप्रकाश व्यास के निर्देशन में प्राचीन घरों पर मांडणा भी बेहतरीन व आकर्षक बनाये गये। वहीं रंगोली भी उकेरी गई। यहां पर आये देशी-विदेशी सैलानियों ने सहित कई लोगों ने स्थानीय मांडणों को बारिकी से देखा एवं अपने कैमरों में कैद किया।

पांचवीं-आठवीं बोर्ड परीक्षा फार्म भरने की अंतिम तिथि बढ़ी

सरकारी और प्राइवेट स्कूलों ने अब तक नहीं भरे एग्जाम फॉर्म, दूसरी बार डेट बढ़ाई

- **पांच फरवरी तक केवल 80 फीसदी अभ्यर्थियों की ओर से ही परीक्षा फॉर्म भरे गए हैं**
- **फॉर्म भरने से कुल वंचित अभ्यर्थियों में 40 हजार आठवीं और 80 हजार पांचवी के विद्यार्थी शामिल हैं**

बीकानेर, (निसं)। पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षा ने पांचवीं और आठवीं बोर्ड पैटर्न परीक्षा के एग्जाम फॉर्म की लास्ट डेट दूसरी बार बढ़ाई है। अब 15 जनवरी तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं शिक्षा विभाग ने साफ कर दिया है कि ये अंतिम अवसर है। इसके बाद डेट्स में बढ़ोतरी नहीं होगी।

पंजीयक नरेंद्र सोनी ने बताया कि अभी भी बड़ी संख्या में प्राइवेट और सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल ने ऑनलाइन आवेदन लॉक नहीं किए हैं। ऐसे में स्टूडेंट्स को ध्यान में रखते हुए दूसरी बार डेट बढ़ाई गई है। दोनों क्लास में करीब 26 लाख रुपए स्टूडेंट्स है, जिसमें एक लाख से ज्यादा स्टूडेंट्स के फॉर्म बुधवार तक भी अधूरे थे। आमतौर पर शिक्षा विभाग हर साल दो बार लास्ट डेट्स बढ़ा देता है। पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएं राजस्थान बीकानेर ने परीक्षा फार्म बनाने का प्रोसेस 20 जनवरी से शुरू किया था। पूर्व में अंतिम तिथि 5 फरवरी निर्धारित की गई थी। 5 फरवरी तक केवल 80 फीसदी अभ्यर्थियों की ओर से ही परीक्षा फॉर्म भरे गए। ऐसे में शिक्षा विभाग ने अंतिम तिथि में सप्ताह भर की और बढ़ोतरी की थी। पंजीयक ने बताया कि अब अंतिम तिथि में बढ़ोतरी की संभावना कम है। संबंधी संस्था प्रधानों को निर्धारित समय 12 फरवरी तक आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं। दो दिन पहले तक करीब 1.20 लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा फॉर्म नहीं भरा है। इन अभ्यर्थियों के पास अब दो दिन का समय शेष है। फॉर्म भरने से कुल वंचित अभ्यर्थियों में 40 हजार आठवीं और 80 हजार पांचवी के विद्यार्थी शामिल हैं।

माघ मास की पवित्र पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाई

पुष्कर/अजमेर, (निसं)। माघ मास की पवित्र पूर्णिमा के मौके पर बुधवार को पुष्कर सरोवर में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान व पूजन कर धर्मलाभ कमाया। श्रद्धालुओं ने जगतपिता ब्रहमा मंदिर में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। आचार्य पवन शर्मा ने बताया कि धर्मशास्त्रों में माघ पूर्णिमा के स्नान, पूजन व दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है, जिसके चलते हजारों श्रद्धालु पुष्कर पहुंचे। वहीं शाम को जयपुर घाट पर सरोवर की दिव्य महाआरती का आयोजन किया गया।

माघ पूर्णिमा के मौके पर बुधवार की शाम पुष्करराज दिव्य महाआरती संघ की ओर से जयपुर घाट पर सरोवर की महाआरती की गई। संघ के संरक्षक अजय शर्मा ने बताया कि पं. कैलाशनाथ दाधीच के आचार्यत्व में सरोवर का अभिषेक किया गया। इसके साथ ही पं. चंद्रशेखर गौड़, ईशान गौड़, यश गौड़ ने तीन मंचों से सरोवर की दिव्य महाआरती की।

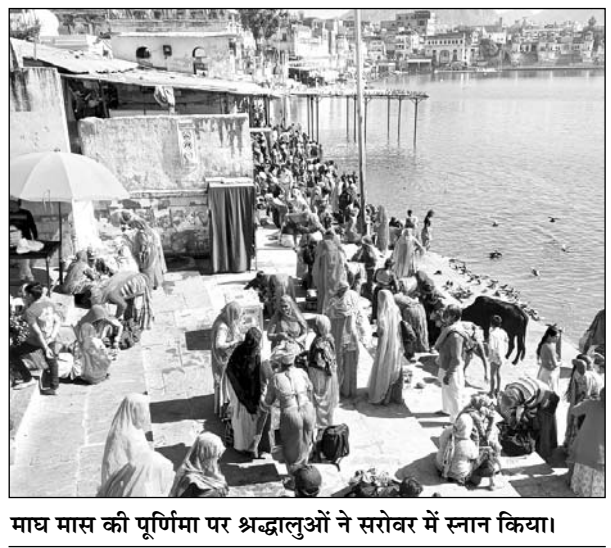

माघ मास की पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने सरोवर में स्नान किया।

इस अवसर पर नगर सुधार न्यास अजमेर के पूर्व अध्यक्ष धर्मेश जैन, मांगीलाल, विकास खटाना, इंद्रसिंह पवार, बाबूलाल दग्दी, अर्पित सांखला, गायत्री शर्मा, अर्चना गौड़, अरुणा शर्मा, अर्चना जैन, विक्रम सिंह, रवि मेहता, कथावाचक स्वामी केशवचार्य महाराज काफी संख्या में धर्मप्रेमी महिला पुरूषों ने महाआरती में भाग लिया।

- **विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने पुष्कर में पवित्र सरोवर का दुग्धाभिषेक कर पूजा-अर्चना की**

स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने जगतपिता ब्रह्मा मंदिर, रंगनाथ वेणुगोपाल मंदिर, वराह मंदिर, रमा बैकुंठ मंदिर, कल्याणजी मंदिर सहित सावित्री व पाप मोचनी पहाड़ी के दर्शन किए। माघ पूर्णिमा के अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को तीर्थ नगरी पुष्कर में पवित्र सरोवर का दुग्धाभिषेक कर पूजा-अर्चना की और जगतपिता ब्रह्माजी की पूजा-अर्चना कर दर्शन कर आशीर्वाद लिया। सिंधी समाज के कुलगुरु काली टोपी परिवार के पंडित सुरेश पाराशर और पंडित रवि पाराशर ने वेदोक्त मंत्रोच्चार के साथ विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी पुष्कर सरोवर में विशेष पूजा-अर्चना संपन्न करवाई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

इस अवसर देवनानी ने कहा कि माघी पूर्णिमा का दिन आध्यात्मिक ऊर्जा, पुण्य और मोक्ष प्राप्ति का विशेष अवसर है। इस शुभ दिवस पर तीर्थराज पुष्कर सरोवर पर पूजन व जगतपिता ब्रह्माजी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उन्होंने देश व प्रदेश के लोगों के लिए सुख समृद्धि और शांति की कामना करते हुए प्रार्थना की।

राशिफल

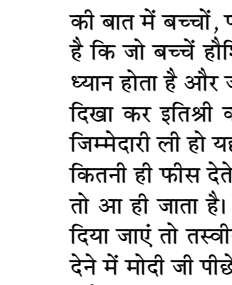

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 13 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र रात्रि 9:07 तक, शोभन योग प्रात: 7:31 तक, बालव करण प्रात: 7:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज शब-ए-बारात है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:32 तक, चर 11:18 से 12:41 तक, लाभ-अमृत 12:41 से 3:27 तक, शुभ 4:50 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 6:13

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि का भय है। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी अभी यथावत बनी रहेगी। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।